اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** र-ज़वी دامت برکاتہم العالیہ

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा । दुआ़ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़-ज़मत और बुज़ुर्गी वाले ।

(المُستطرَف ج ١ ص ٤٠ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आखि़र एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये ।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत

13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

आक़ा का महीना

येह रिसाला **(आक़ा का महीना)**

शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** र-ज़वी دامت برکاتہم العالیہ ने **उर्दू** ज़बान में तह़रीर फ़रमाया है ।

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और मक-त-बतुल मदीना से शाएअ़ करवाया है । इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, ई-मेइल या SMS) मुत़्लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये ।

राबित़ा : मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)
मक-त-बतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस,
अलिफ़ की मस्जिदके सामने, तीन दरवाज़ा,
अह़मदआबाद-1, गुजरात Mo. 9374031409
E-mail : translationmaktabhind@dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का महीना[1]

शैत़ान लाख सुस्ती दिलाए येह बयान (32 सफ़ह़ात) मुकम्मल पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ रोज़ों और इ़बादते इलाही के जज़्बे से मालामाल हो जाएंगे ।

आ़शिक़े दुरूदो सलाम का मक़ाम

ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अबू बक्र शिबली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَلِی एक रोज़ **बग़दादे मुअ़ल्ला** के जय्यिद आ़लिम ह़ज़रते सय्यिदुना **अबू बक्र बिन मुजाहिद** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَاحِد के पास तशरीफ़ लाए, उन्हों ने फ़ौरन खड़े हो कर उन को गले लगा लिया और पेशानी चूम कर बड़ी ता'ज़ीम के साथ अपने पास बिठाया । ह़ाज़िरीन ने अ़र्ज़ किया : या सय्यिदी ! आप और अहले बग़दाद आज तक इन्हें दीवाना कहते रहे हैं मगर आज इन की इस क़दर ता'ज़ीम क्यूं ? जवाब दिया : मैं ने यूं ही ऐसा नहीं किया, اَلْحَمْدُ لِلّٰه आज रात मैं ने ख़्वाब में येह ईमान अफ़रोज़ मन्ज़र देखा कि ह़ज़रते सय्यिदुना **अबू बक्र शिबली** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَلِی **बारगाहे रिसालत**

---

1 : येह बयान अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी के आ़लमी म-दनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना बाबुल मदीना कराची में होने वाले हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ (26 र-जबुल मुरज्जब 1431 सि.हि./8-7-10) में फ़रमाया था । तरमीम व इज़ाफ़े के साथ तह़रीरन ह़ाज़िरे ख़िदमत है ।
-मजलिसे मक-त-बतुल मदीना

में ह़ाज़िर हुए तो सरकारे दो आ़लम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने खड़े हो कर उन को सीने से लगा लिया और पेशानी को बोसा दे कर अपने पहलू में बिठा लिया। मैं ने अ़र्ज़ की **: या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! **शिबली** पर इस क़दर शफ़्क़त की वज्ह ? **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए गु़यूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल ड़यूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने (गै़ब की ख़बर देते हुए) फ़रमाया कि येह हर नमाज़ के बा'द येह आयत पढ़ता है **:** لَقَدْ جَآءَكُمْ رَسُوْلٌ مِّنْ اَنْفُسِكُمْ عَزِیْزٌ عَلَیْهِ مَا عَنِتُّمْ حَرِیْصٌ عَلَیْكُمْ بِالْمُؤْمِنِیْنَ رَءُوْفٌ رَّحِیْمٌ ﴿۱۲۸﴾ (پ ۱۱، التوبه ۱۲۸)
और इस के बा'द मुझ पर दुरूद पढ़ता है। (اَلْقَوْلُ الْبَدِیع ص ۳۴۶)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का महीना

रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का **शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म** के बारे में फ़रमाने मुकर्रम है **:** شَعْبَانُ شَهْرِیْ وَرَمَضَانُ شَهْرُ اللهِ۔ या'नी शा'बान मेरा महीना है और र-मज़ान **अल्लाह** का महीना है।

(اَلْجَامِعُ الصَّغِیر لِلسُّیُوطی ص ۳۰۱ حدیث ۴۸۸۹)

शा'बान के पांच ह़ुरूफ़ की बहारें

سُبْحَانَ اللهِ عَزَّوَجَلَّ ! माहे **शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म** की अ़-ज़-मतों पर कु़रबान ! इस की फ़ज़ीलत के लिये इतना ही काफ़ी है कि हमारे मीठे मीठे आक़ा मक्की म-दनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इसे **''मेरा महीना''** फ़रमाया। सरकारे गौ़से आ'ज़म शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी ह़म्बली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَلِی लफ़्ज़ **''शा'बान''** के पांच ह़ुरूफ़ **:** ''ش، ع، ب، ا، ن'' के

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : उस शख़्स की नाक ख़ाक आलूद हो जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़े। (ترمذی)

मु-तअ़ल्लिक़ नक़्ल फ़रमाते हैं : **ش** से मुराद ''शरफ़'' या'नी बुज़ुर्गी, **ع** से मुराद ''उ़लुव्व'' या'नी बुलन्दी, **ب** से मुराद ''बिर'' या'नी एह़सान, ''**ا**'' से मुराद ''उल्फ़त'' और **ن** से मुराद ''नूर'' है तो येह तमाम चीज़ें **अल्लाह तआ़ला** अपने बन्दों को इस महीने में अ़ता फ़रमाता है, येह वोह महीना है जिस में नेकियों के दरवाज़े खोल दिये जाते हैं, ब-र-कतों का नुज़ूल होता है, ख़त़ाएं मिटा दी जाती हैं और गुनाहों का कफ़्फ़ारा अदा किया जाता है, और ख़ैरुल बरिय्यह, सय्यिदुल वरा जनाबे मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूदे पाक की कसरत की जाती है और येह नबिय्ये मुख़्तार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूद भेजने का महीना है। **(غُنْيَةُ الطّالِبين ج۱ ص ۳٤۱،۳٤۲)**

सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان का जज़्बा

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं : ''**शा'बान** का चांद नज़र आते ही सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان तिलावते कु़रआने पाक की त़रफ़ ख़ूब मु-तवज्जेह हो जाते, अपने अम्वाल की ज़कात निकालते ताकि गु-रबा व मसाकीन मुसल्मान माहे र-मज़ान के रोज़ों के लिये तय्यारी कर सकें, हुक्काम क़ैदियों को त़लब कर के जिस पर ''ह़द'' (या'नी शर-ई सज़ा) जारी करना होती उस पर ह़द क़ाइम करते, बक़िय्या में से जिन को मुनासिब होता उन्हें आज़ाद कर देते, ताजिर अपने क़र्ज़े अदा कर देते, दूसरों से अपने क़र्ज़े वुसूल कर लेते। (यूं माहे **र-मज़ानुल मुबारक** से क़ब्ल ही अपने आप को फ़ारिग़ कर लेते) और र-मज़ान शरीफ़ का चांद नज़र आते ही ग़ुस्ल कर के (बा'ज़ ह़ज़रात) ए'तिकाफ़ में बैठ जाते।'' **(ایضاً ص ۳٤۱)**

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर दस मरतबा दुरूदे पाक पढ़े **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर सो रह़मतें नाज़िल फ़रमाता है। (طبرانی)

मौजूदा मुसल्मानों का जज़्बा

سُبْحٰنَ اللهِ عَزَّوَجَلَّ ! पहले के मुसल्मानों को इबादत का किस क़दर ज़ौक़ होता था ! मगर अफ़्सोस ! आज कल के मुसल्मानों को ज़ियादा तर हुसूले माल ही का शौक़ है। पहले के म-दनी सोच रखने वाले मुसल्मान मु-तबर्रक अय्याम (या'नी ब-र-कत वाले दिनों) में रब्बुल अनाम عَزَّوَجَلَّ की ज़ियादा से ज़ियादा इबादत कर के उस का क़ुर्ब ह़ासिल करने की कोशिशें करते थे और आज कल के मुसल्मान, मुबारक दिनों, ख़ुसूसन माहे र-मज़ानुल मुबारक में दुन्या की ज़लील दौलत कमाने की नई नई तरकीबें सोचते हैं। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपने बन्दों पर मेह्रबान हो कर नेकियों का अज्रो सवाब ख़ूब बढ़ा देता है, लेकिन दुन्या की दौलत से मह़ब्बत करने वाले लोग र-मज़ानुल मुबारक में अपनी चीज़ों का भाव बढ़ा कर ग़रीब मुसल्मानों की परेशानियों में इज़ाफ़ा कर देते हैं। सद करोड़ अफ़्सोस ! ख़ैर ख़्वाहिये मुस्लिमीन का जज़्बा दम तोड़ता नज़र आ रहा है !

ऐ ख़ासए ख़ासाने रुसुल वक़्ते दुआ है उम्मत पे तेरी आ के अ़जब वक़्त पड़ा है
जो दीन बड़ी शान से निकला था वत़न से परदेस में वोह आज ग़रीबुल ग़ु-रबा है

फ़रियाद है ऐ कश्तिये उम्मत के निगहबां
बेड़ा येह तबाही के क़रीब आन लगा है

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

नफ़्ल रोज़ों का पसन्दीदा महीना

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हमारे दिलों के चैन, सरवरे कौनैन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم माहे **शा'बान** में कसरत से रोज़े रखना पसन्द फ़रमाते। चुनान्चे **ह़ज़रते** सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन अबी क़ैस رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से

मरवी है कि उन्हों ने उम्मुल मुअमिनीन सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا को फ़रमाते सुना : अम्बिया के सरताज, साह़िबे मे'राज صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का पसन्दीदा महीना **शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म** था कि इस में रोज़े रखा करते फिर इसे र-मज़ानुल मुबारक से मिला देते।

(سُنَنِ ابوداوٗد ج۲ص۴۷۶ حدیث۲۴۳۱)

लोग इस से ग़ाफ़िल हैं

ह़ज़रते सय्यिदुना उसामा बिन ज़ैद رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं : मैं ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मैं देखता हूं कि जिस त़रह़ आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **शा'बान** में रोज़े रखते हैं इस त़रह़ किसी भी महीने में नहीं रखते ? फ़रमाया : **रजब** और **र-मज़ान** के बीच में येह महीना है, लोग इस से ग़ाफ़िल हैं, इस में लोगों के आ'माल **अल्लाहु** रब्बुल आ़-लमीन عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ उठाए जाते हैं और मुझे येह मह़बूब है कि मेरा अ़मल इस ह़ाल में उठाया जाए कि मैं रोज़ादार हूं।

(سُنَن نَسائی ص ۳۸۷ حدیث ۲۳۵۴)

मरने वालों की फ़ेहरिस बनाने का महीना

ह़ज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا फ़रमाती हैं : ताजदारे रिसालत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पूरे **शा'बान** के रोज़े रखा करते थे। फ़रमाती हैं कि मैं ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! क्या सब महीनों में आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के नज़्दीक ज़ियादा पसन्दीदा **शा'बान** के रोज़े रखना है ? तो मह़बूबे रब्बुल इ़बाद صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इस साल मरने वाली हर जान को लिख देता है और मुझे येह पसन्द है कि मेरा वक़्ते रुख़्सत आए और मैं रोज़ादार हूं।

(مُسْنَدُ اَبِیْ یَعْلٰی ج۴ص۲۷۷ حدیث۴۸۹۰)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** जिस ने मुझ पर सुब्ह व शाम दस दस बार दुरूदे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअ़त मिलेगी । (مجمع الزوائد)

आक़ा शा 'बान के अक्सर रोज़े रखते थे

बुख़ारी शरीफ़ में है : ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا फ़रमाती हैं कि **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **शा 'बान** से ज़ियादा किसी महीने में रोज़े न रखा करते बल्कि पूरे **शा 'बान** ही के रोज़े रख लिया करते थे और फ़रमाया करते : अपनी इस्तित़ाअ़त के मुत़ाबिक़ अ़मल करो कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस वक़्त तक अपना फ़ज़्ल नहीं रोकता जब तक तुम उक्ता न जाओ । **(صَحیح بُخاری ج۱ص۶۴۸حدیث ۱۹۷۰)**

ह़दीसे पाक की शर्ह़

शारेह़े बुख़ारी **ह़ज़रते** अ़ल्लामा **मुफ़्ती मुह़म्मद शरीफ़ुल ह़क़** अमजदी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ القَوِی इस ह़दीसे पाक के तह़्त लिखते हैं : मुराद येह है कि शा'बान में अक्सर दिनों में रोज़ा रखते थे इसे तग़्लीबन (या'नी ग़-लबे और ज़ियादत के लिह़ाज़ से) कुल (या'नी सारे महीने के रोज़े रखने) से ता'बीर कर दिया । जैसे कहते हैं : ''फ़ुलां ने पूरी रात इबादत की'' जब कि उस ने रात में खाना भी खाया हो और ज़रूरिय्यात से फ़राग़त भी की हो, यहां तग़्लीबन अक्सर को ''कुल'' कह दिया । मज़ीद फ़रमाते हैं : इस ह़दीस से मा'लूम हुवा कि शा'बान में जिसे क़ुव्वत हो वोह ज़ियादा से ज़ियादा रोज़े रखे । अलबत्ता जो कमज़ोर हो वोह रोज़ा न रखे क्यूं कि इस से **र-मज़ान** के रोज़ों पर असर पड़ेगा, येही मह़मल (या'नी मुराद व मक़्सद) है उन अह़ादीस का जिन में फ़रमाया गया कि निस्फ़ (या'नी आधे) शा'बान के बा'द रोज़ा न रखो । **(نُزهةُالقاری ج ۳ ص ۳۷۷، ۳۸۰) [ترمذی حدیث ۷۳۸]**

दा 'वते इस्लामी में रोज़ों की बहारें

दा 'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की

मत्बूआ़ 1548 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, ''**फ़ैज़ाने सुन्नत** (जिल्द अव्वल)'' सफ़ह़ा 1379 पर है : हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى फ़रमाते हैं : मज़्कूरा ह़दीसे पाक में पूरे माहे **शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म** के रोज़ों से मुराद अक्सर **शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म** (या'नी महीने के आधे से ज़ियादा दिनों) के रोज़े हैं। (مُكَاشَفَةُ الْقُلُوب ص ٣٠٣) अगर कोई पूरे **शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म** के रोज़े रखना चाहे तो उस को मुमा-न-अ़त भी नहीं। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** के कई इस्लामी भाई और इस्लामी बहनों में **र-जबुल मुरज्जब** और **शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म** दोनों महीनों में रोज़े रखने की तरकीब होती है और मुसल्सल रोज़े रखते हुए येह ह़ज़रात **र-मज़ानुल मुबारक** से मिल जाते हैं।

शा'बान के अक्सर रोज़े रखना सुन्नत है

उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا रिवायत फ़रमाती हैं : हुज़ूरे अकरम, नुरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को मैं ने **शा'बान** से ज़ियादा किसी महीने में **रोज़ा** रखते न देखा। आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **सिवाए चन्द दिन के पूरे ही माह** के रोज़े रखा करते थे। (سُنَنِ ترمذی ج ٢ ص ١٨٢ حدیث ٧٣٦)

तेरी सुन्नतों पे चल कर मेरी रूह जब निकल कर
चले तू गले लगाना म-दनी मदीने वाले

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 428)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर रोज़े जुमुआ़ दुरूद शरीफ़ पढ़ेगा मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअ़त करूंगा। (جمع الجوامع)

भलाइयों वाली रातें

उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा عَلَيْهِ اَفْضَلُ الصَّلٰوةِ وَالتَّسْلِيْم رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا फ़रमाती हैं : मैं ने नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम को फ़रमाते सुना : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ (ख़ास तौ़र पर) चार रातों में भलाइयों के दरवाज़े खोल देता है : ﴿1﴾ बक़र ईद की रात ﴿2﴾ ईदुल फ़ित्र की (चांद) रात ﴿3﴾ **शा'बान की पन्दरहवीं रात** कि इस रात में **मरने वालों** के नाम और लोगों का **रिज़्क़** और (इस साल) **ह़ज** करने वालों के नाम लिखे जाते हैं ﴿4﴾ अ़-रफ़े की (या'नी 8 और 9 ज़ुल ह़िज्जा की दरमियानी) रात **अज़ाने** (फ़ज्र) तक। (تفسیر دُرِّ مَنثور ج ۷ ص ۴۰۲)

नाज़ुक फ़ैसले

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! पन्दरह **शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म** की रात कितनी नाज़ुक है ! न जाने किस की क़िस्मत में क्या लिख दिया जाए ! बा'ज़ अवक़ात बन्दा ग़फ़्लत में पड़ा रह जाता है और उस के बारे में कुछ का कुछ हो चुका होता है। "**ग़ुन्यतुत्त़ालिबीन**" में है : बहुत से **कफ़न** धुल कर तय्यार रखे होते हैं मगर कफ़न पहनने वाले बाज़ारों में घूम फिर रहे होते हैं, काफ़ी लोग ऐसे होते हैं कि उन की **क़ब्रें** खोदी जा चुकी होती हैं मगर उन में दफ़्न होने वाले ख़ुशियों में मस्त होते हैं, बा'ज़ लोग **हंस रहे** होते हैं ह़ालां कि उन की मौत का वक़्त क़रीब आ चुका होता है। कई **मकानात** की ता'मीरात का काम पूरा हो गया होता है मगर साथ ही उन के मालिकान की ज़िन्दगी का वक़्त भी पूरा हो चुका होता है।

(غُنْيَةُ الطَّالِبِين ج ۱ ص ۳۴۸)

आगाह अपनी मौत से कोई बशर नहीं
सामान सो बरस का है पल की ख़बर नहीं

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा उस ने जन्नत का रास्ता छोड़ दिया। (طبرانی)

ढेरों गुनाहगारों की मग़्फ़िरत होती है मगर...

ह़ज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا से रिवायत है, हुज़ूर सरापा नूर, फ़ैज़ गन्जूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : मेरे पास जिब्रईल (عَلَيْهِ السَّلَام) आए और कहा : शा'बान की पन्दरहवीं रात है, इस में **अल्लाह तआ़ला** जहन्नम से इतनों को आज़ाद फ़रमाता है जितने बनी कल्ब की बकरियों के बाल हैं मगर **काफ़िर** और अ़दावत वाले और रिश्ता काटने वाले और **कपड़ा लटकाने** वाले और **वालिदैन की ना फ़रमानी** करने वाले और शराब के आ़दी की त़रफ़ नज़रे रह़मत नहीं फ़रमाता। (شُعَبُ الْاِیمان ج ۳ص ۳۸٤ حدیث ۳۸۳۷) (ह़दीसे पाक में ''कपड़ा लटकाने वाले'' का जो बयान है, इस से मुराद वोह लोग हैं जो **तकब्बुर** के साथ **टख़्नों** के नीचे तहबन्द या पाजामा या सौब या'नी लम्बा कुरता वग़ैरा लटकाते हैं) करोड़ों ह़म्बलियों के अ़ज़ीम पेशवा ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अह़मद बिन ह़म्बल رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** इब्ने अ़म्र رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से जो रिवायत नक़्ल की उस में **क़ातिल** का भी ज़िक्र है।

(مُسندِ اِمام احمد ج ۲ ص ۵۸۹ حدیث ٦٦٥٣)

ह़ज़रते सय्यिदुना कसीर बिन मुर्रह رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि ताजदारे रिसालत, सरापा रह़मत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ शा'बान की पन्दरहवीं शब में तमाम ज़मीन वालों को बख़्श देता है सिवाए **मुश्रिक** और **अ़दावत वाले** के।

(شُعَبُ الْاِیمان ج ۳ ص ۳۸۱ حدیث ۳۸۳۰)

ह़ज़रते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام की दुआ़

अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते मौला मुश्किल कुशा, सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم **शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म**

की पन्दरहवीं रात या'नी शबे बराअत में अक्सर बाहर तशरीफ़ लाते। एक बार इसी त़रह़ **शबे बराअत** में बाहर तशरीफ़ लाए और आस्मान की त़रफ़ नज़र उठा कर फ़रमाया : एक मर्तबा **अल्लाह तआ़ला** के नबी ह़ज़रते **सय्यिदुना दावूद** عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने **शा'बान** की पन्दरहवीं रात आस्मान की त़रफ़ निगाह उठाई और फ़रमाया : येह वोह वक़्त है कि इस वक़्त में जिस शख़्स ने जो भी दुआ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से मांगी उस की दुआ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने क़बूल फ़रमाई और जिस ने मग़्फ़िरत त़लब की **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उस की मग़्फ़िरत फ़रमा दी बशर्ते कि दुआ करने वाला **उ़श्शार** (या'नी ज़ुल्मन टेक्स लेने वाला), **जादूगर, काहिन** और **बाजा बजाने वाला** न हो, फिर येह दुआ की : **اَللّٰهُمَّ رَبَّ دَاوٗدَ اغْفِرْ لِمَنْ دَعَاكَ فِيْ هٰذِهِ اللَّيْلَةِ اَوِ اسْتَغْفَرَكَ فِيْهَا۔** या'नी ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! ऐ दावूद के परवर दगार ! जो इस रात में तुझ से दुआ करे या मग़्फ़िरत त़लब करे तू उस को बख़्श दे। **(لَطَائِفُ الْمَعَارِف لابن رجب الحنبلی ج۱ ص۱۳۷ بِاِختصار)**

हर ख़त़ा तू दर गुज़र कर बे कसो मजबूर की
हो इलाही ! मग़्फ़िरत हर बे कसो मजबूर की

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 96)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मह़रूम लोग

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! शबे बराअत बेह़द अहम रात है, किसी सूरत से भी इसे ग़फ़्लत में न गुज़ारा जाए, इस रात रह़मतों की ख़ूब बरसात होती है। इस मुबारक शब में **अल्लाह** तबा-र-क व तआ़ला "बनी कल्ब" की बकरियों के बालों से भी ज़ियादा लोगों को जहन्नम

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़े तो वोह लोगों में से कन्जूस तरीन शख़्स है। (مسند احمد)

से आज़ाद फ़रमाता है। किताबों में लिखा है : "क़बीलए बनी कल्ब" क़बाइले अ़रब में सब से ज़ियादा बकरियां पालता था।[1] आह ! कुछ बद नसीब ऐसे भी हैं जिन पर शबे बराअत या'नी छुटकारा पाने की रात भी न बख़्शे जाने की वईद है। **हज़रते** सय्यिदुना इमाम बैहक़ी शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی "फ़ज़ाइलुल अवक़ात" में नक़्ल करते हैं : **रसूले अकरम,** नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : छ[6] आदमियों की इस रात भी बख़्शिश नहीं होगी : ﴾1﴿ शराब का आ़दी ﴾2﴿ मां बाप का ना फ़रमान ﴾3﴿ ज़िना का आ़दी ﴾4﴿ क़त्ए तअ़ल्लुक़ करने वाला ﴾5﴿ तस्वीर बनाने वाला और ﴾6﴿ चुग़ल ख़ोर। (فضائلُ الْاَوقات ج۱ ص۱۳۰ حدیث ۲۷) इसी त़रह़ काहिन, जादूगर, तकब्बुर के साथ पाजामा या तहबन्द टख़्नों के नीचे लटकाने वाले और किसी मुसल्मान से बिला इजाज़ते शर-ई बुग़्ज़ो कीना रखने वाले पर भी इस रात मग़्फ़िरत की सआ़दत से मह़रूमी की वईद है, चुनान्चे तमाम मुसल्मानों को चाहिये कि मु-तज़क्करा (या'नी बयान कर्दा) गुनाहों में से अगर مَعَاذَ اللّٰه किसी गुनाह में मुलव्वस हों तो वोह बिल ख़ुसूस उस गुनाह से और बिल उ़मूम हर गुनाह से **शबे बराअत** के आने से पहले बल्कि आज और अभी सच्ची तौबा कर लें, और अगर बन्दों की ह़क़ त-लफ़ियां की हैं तो तौबा के साथ साथ उन की मुआ़फ़ी तलाफ़ी की तरकीब फ़रमा लें।

इमामे अहले सुन्नत رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه का पयाम तमाम मुसल्मानों के नाम

मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, वलिय्ये ने'मत,

1: مِرقاة ج۳ ص۳۷۵

अ़ज़ीमुल ब-र-कत, अ़ज़ीमुल मर्तबत, परवानए शम्ए़ रिसालत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, ह़ामिये सुन्नत, माह़िये बिद्अ़त, पीरे त़रीक़त, बाइ़से ख़ैरो ब-र-कत, ह़-नफ़ी मज़हब के अ़ज़ीम आ़लिम व मुफ़्ती ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अलह़ाज अल ह़ाफ़िज़ अल क़ारी शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن ने अपने एक इरादत मन्द (या'नी मो'तक़िद) को **शबे बराअत** से क़ब्ल तौबा और मुआ़फ़ी तलाफ़ी के तअ़ल्लुक़ से एक मक्तूब शरीफ़ इरसाल फ़रमाया जो कि उस की इफ़ादियत के पेशे नज़र ह़ाज़िरे ख़िदमत है चुनान्चे ''कुल्लियाते मकातीबे रज़ा'' जिल्द अव्वल सफ़ह़ा 356 ता 357 पर है : **शबे बराअत** क़रीब है, इस रात तमाम बन्दों के आ'माल ह़ज़रते इ़ज़्ज़त में पेश होते हैं। मौला عَزَّوَجَلَّ ब तुफ़ैले ह़ुज़ूरे पुरनूर, शाफ़ेए यौमुन्नुशूर عَلَيْهِ اَفْضَلُ الصَّلٰوةِ وَالتَّسْلِيْم मुसल्मानों के ज़ुनूब (या'नी गुनाह) मुआ़फ़ फ़रमाता है मगर चन्द उन में वोह दो मुसल्मान जो बाहम दुन्यवी वज्ह से रन्जिश रखते हैं, फ़रमाता है : ''इन को रहने दो, जब तक आपस में सुल्ह़ न कर लें।'' लिहाज़ा अहले सुन्नत को चाहिये कि ह़त्तल वस्अ़ क़ब्ले ग़ुरूबे आफ़्ताब **14 शा'बान** बाहम एक दूसरे से सफ़ाई कर लें, एक दूसरे के ह़ुक़ूक़ अदा कर दें या मुआ़फ़ करा लें कि बि इज़्निही तआ़ला ह़ुक़ूक़ुल इ़बाद से सह़ाइफ़े आ'माल (या'नी आ'माल नामे) ख़ाली हो कर बारगाहे इ़ज़्ज़त में पेश हों। ह़ुक़ूक़े मौला तआ़ला के लिये तौबए सादिक़ा (या'नी सच्ची तौबा) काफ़ी है। (ह़दीसे पाक में है :) اَلتَّائِبُ مِنَ الذَّنْبِ كَمَنْ لَّا ذَنْبَ لَهٗ (या'नी गुनाह से तौबा करने वाला ऐसा है जैसे उस ने गुनाह किया ही नहीं ((ابن ماجه حدیث ٤٢٥٠)) ऐसी ह़ालत में बि इज़्निही तआ़ला ज़रूर इस शब में उम्मीदे मग़्फ़िरते ताम्मा (या'नी मग़्फ़िरत की पक्की उम्मीद) है बशर्ते सिह़्ह़ते अ़क़ीदा। (या'नी अ़क़ीदा दुरुस्त होना शर्त है) وَهُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْم۔

(और वोह गुनाह मिटाने वाला रह़मत फ़रमाने वाला है) । येह सब मुसा-ल-ह़ते इख़्वान (या'नी भाइयों में सुल्ह़ करवाना) व मुआ़फ़िये ह़ुक़ूक़ بِحَمْدِہٖ تَعَالٰی यहां सालहाए दराज़ (या'नी काफ़ी बरसों) से जारी है, उम्मीद है कि आप भी वहां के मुसल्मानों में इस का इजरा कर के مَنْ سَنَّ فِی الْاِسْلَامِ سُنَّةً حَسَنَةً فَلَهٗ اَجْرُهَا وَاَجْرُمَنْ عَمِلَ بِهَا اِلٰی یَوْمِ الْقِیٰمَةِ لَا یَنْقُصُ مِنْ اُجُوْرِ هِمْ شَیْءٌ (या'नी जो इस्लाम में अच्छी राह निकाले उस के लिये इस का सवाब है और क़ियामत तक जो इस पर अ़मल करें उन सब का सवाब हमेशा उस के नामए आ'माल में लिखा जाए बिग़ैर इस के कि उन के सवाबों में कुछ कमी आए) के मिस्दाक़ हों और इस फ़क़ीर के लिये अ़फ़्वो आ़फ़िय्यते दारैन की दुआ़ फ़रमाएं। फ़क़ीर आप के लिये दुआ़ करता है और करेगा। सब मुसल्मानों को समझा दिया जाए कि वहां (या'नी बारगाहे इलाही में) न ख़ाली ज़बान देखी जाती है न निफ़ाक़ पसन्द है, सुल्ह़ व मुआ़फ़ी सब सच्चे दिल से हो। वस्सलाम

फ़क़ीर अह़मद रज़ा क़ादिरी عُفِیَ عَنْهُ **अज़ : बरेली**

पन्दरह शा'बान का रोज़ा

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم से मरवी है कि नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम عَلَيْهِ اَفْضَلُ الصَّلٰوةِ وَالتَّسْلِيْم का फ़रमाने अ़ज़ीम है : जब पन्दरह शा'बान की रात आए तो उस में क़ियाम (या'नी इबादत) करो और दिन में रोज़ा रखो। बेशक **अल्लाह तआ़ला** गुरूबे आफ़्ताब से आस्माने दुन्या पर ख़ास तजल्ली फ़रमाता और कहता है : "है कोई मुझ से मग़्फ़िरत त़लब करने वाला कि उसे बख़्श दूं! है कोई रोज़ी त़लब करने वाला कि उसे रोज़ी दूं! है कोई मुसीबत ज़दा कि उसे आ़फ़िय्यत अ़त़ा

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर रोज़े जुमुआ़ दो सो बार दुरूदे पाक पढ़ा उस के दो सो साल के गुनाह मुआ़फ़ होंगे। (جمع الجوامع)

करूं ! है कोई ऐसा ! है कोई ऐसा ! और येह उस वक़्त तक फ़रमाता है कि फ़ज्र तुलूअ़ हो जाए।" (سُنَنِ اِبن ماجه ج٢ص١٦٠حديث١٣٨٨)

फ़ाएदे की बात

शबे बराअत में आ'माल नामे तब्दील होते हैं लिहाज़ा मुम्किन हो तो **14 शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म** को भी रोज़ा रख लिया जाए ताकि आ'माल नामे के आख़िरी दिन में भी रोज़ा हो। **14 शा'बान को अ़स्र की नमाज़ बा जमाअ़त पढ़ कर वहीं नफ़्ल ए'तिकाफ़ कर लिया जाए और नमाज़े मग़रिब के इन्तिज़ार की निय्यत से मस्जिद ही में ठहरा जाए ताकि आ'माल नामा तब्दील होने के आख़िरी लम्हात में मस्जिद की ह़ाज़िरी, ए'तिकाफ़ और इन्तिज़ारे नमाज़ वग़ैरा का सवाब लिखा जाए।** बल्कि ज़हे नसीब ! सारी ही रात इ़बादत में गुज़ारी जाए।

सब्ज़ परचा

अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ एक मर्तबा **शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म** की पन्दरहवीं रात या'नी शबे बराअत इ़बादत में मसरूफ़ थे। सर उठाया तो एक "**सब्ज़ परचा**" मिला जिस का नूर आस्मान तक फैला हुवा था, उस पर लिखा था, "**هٰذِهٖ بَرَاءَةٌ مِّنَ النَّارِ مِنَ الْمَلِكِ الْعَزِيْزِ لِعَبْدِهٖ عُمَرَ بْنِ عَبْدِالْعَزِيْزِ**" या'नी ख़ुदाए मालिको ग़ालिब की त़रफ़ से येह "जहन्नम की आग से आज़ादी का परवाना" है जो उस के बन्दे उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ को अ़त़ा हुवा है।

(تفسير رُوحُ البَيان ج٨ص٤٠٢)

سُبْحٰنَ اللهِ عَزَّوَجَلَّ ! मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस ह़िकायत में जहां अमीरुल मुअमिनीन सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ

की अ़-ज़-मतो फ़ज़ीलत का इज़्हार है वहीं **शबे बराअत** की रिफ़्अ़तो शराफ़त का भी ज़ुहूर है । اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ येह मुबारक शब जहन्नम की भड़क्ती आग से **बराअत** (या'नी छुटकारा) पाने की रात है, इसी लिये इस रात को ''शबे बराअत'' कहा जाता है ।

मग़रिब के बा'द छ⁶ नवाफ़िल

मा'मूलाते औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام से है कि मग़रिब के फ़र्ज़ व सुन्नत वग़ैरा के बा'द **छ⁶ रक्अ़त नफ़्ल** दो दो रक्अ़त कर के अदा किये जाएं । **पहली** दो रक्अ़तों से पहले येह निय्यत कीजिये : ''**या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! इन दो रक्अ़तों की ब-र-कत से मुझे दराज़िये उ़म्र बिलख़ैर अ़त़ा फ़रमा ।'' **दूसरी** दो रक्अ़तों में येह निय्यत फ़रमाइये : ''**या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! इन दो रक्अ़तों की ब-र-कत से बलाओं से मेरी ह़िफ़ाज़त फ़रमा ।'' **तीसरी** दो रक्अ़तों के लिये येह निय्यत कीजिये : ''**या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! इन दो रक्अ़तों की ब-र-कत से मुझे अपने सिवा किसी का मोह़ताज न कर ।'' इन 6 रक्अ़तों में **सू-रतुल फ़ातिह़ा** के बा'द जो चाहें वोह सूरतें पढ़ सकते हैं, चाहें तो हर रक्अ़त में **सू-रतुल फ़ातिह़ा** के बा'द तीन तीन बार **सू-रतुल इख़्लास** पढ़ लीजिये । हर दो रक्अ़त के बा'द इक्कीस बार قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَد (पूरी सूरत) या एक बार **सूरए यासीन** शरीफ़ पढ़िये बल्कि हो सके तो दोनों ही पढ़ लीजिये । येह भी हो सकता है कि कोई एक इस्लामी भाई बुलन्द आवाज़ से **यासीन** शरीफ़ पढ़ें और दूसरे ख़ामोशी से ख़ूब कान लगा कर सुनें । इस में येह ख़याल रहे कि सुनने वाला इस दौरान ज़बान से **यासीन** शरीफ़ बल्कि कुछ भी न पढ़े और येह मस्अला ख़ूब याद रखिये कि जब क़ुरआने करीम बुलन्द

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : मुझ पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे गुनाहों के लिये मग़्फ़िरत है। (ابن عساکر)

आवाज़ से पढ़ा जाए तो जो लोग सुनने के लिये हाज़िर हैं उन पर फ़र्ज़ ऐन है कि चुपचाप ख़ूब कान लगा कर सुनें। اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ रात शुरूअ़ होते ही सवाब का अम्बार लग जाएगा। हर बार **यासीन** शरीफ़ के बा'द **''दुआए निस्फ़े शा'बान''** भी पढ़िये।

दुआए निस्फ़े शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

اَللّٰهُمَّ يَا ذَا الْمَنِّ وَلَا يُمَنُّ عَلَيْهِ ؕ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَامِ ؕ يَا ذَا الطَّوْلِ وَالْاِنْعَامِ ؕ لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنْتَ ؕ ظَهْرُ اللَّاجِيْنَ ؕ وَجَارُ الْمُسْتَجِيْرِيْنَ ؕ وَاَمَانُ الْخَآئِفِيْنَ ؕ اَللّٰهُمَّ اِنْ كُنْتَ كَتَبْتَنِيْ عِنْدَكَ فِيْ اُمِّ الْكِتٰبِ شَقِيًّا اَوْ مَحْرُوْمًا اَوْ مَطْرُوْدًا اَوْ مُقَتَّرًا عَلَيَّ فِي الرِّزْقِ فَامْحُ اللّٰهُمَّ بِفَضْلِكَ شَقَاوَتِيْ وَحِرْمَانِيْ وَطَرْدِيْ وَاقْتِتَارَ رِزْقِيْ ؕ وَاَثْبِتْنِيْ عِنْدَكَ فِيْ اُمِّ الْكِتٰبِ سَعِيْدًا مَّرْزُوْقًا مُّوَفَّقًا لِّلْخَيْرَاتِ ؕ فَاِنَّكَ قُلْتَ وَقَوْلُكَ الْحَقُّ فِيْ كِتَابِكَ الْمُنَزَّلِ ؕ عَلٰى لِسَانِ نَبِيِّكَ الْمُرْسَلِ ؕ ﴿يَمْحُوا اللّٰهُ مَا يَشَآءُ وَيُثْبِتُ ۚ وَعِنْدَهٗ

اُمُّ الْكِتٰبِ[1] اِلٰهِیْ بِالتَّجَلِّی الْاَعْظَمِ فِیْ لَیْلَةِ النِّصْفِ
مِنْ شَهْرِ شَعْبَانَ الْمُكَرَّمِ الَّتِیْ یُفْرَقُ فِیْهَا كُلُّ
اَمْرٍ حَكِیْمٍ وَّیُبْرَمُ اَنْ تَكْشِفَ عَنَّا مِنَ الْبَلَاءِ
وَالْبَلْوَاءِ مَا نَعْلَمُ وَمَا لَا نَعْلَمُ وَاَنْتَ بِهٖ اَعْلَمُ اِنَّكَ
اَنْتَ الْاَعَزُّ الْاَكْرَمُ وَصَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ
وَّعَلٰى اٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ وَسَلَّمَ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ ○

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! ऐ एह़सान करने वाले कि जिस पर एह़सान नहीं किया जाता ! ऐ बड़ी शानो शौकत वाले ! ऐ फ़ज़्लो इन्आ़म वाले ! तेरे सिवा कोई मा'बूद नहीं। तू परेशान ह़ालों का मददगार, पनाह मांगने वालों को पनाह और ख़ौफ़ज़दों को अमान देने वाला है। ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! अगर तू अपने यहां उम्मुल किताब (या'नी लौह़े मह़फ़ूज़) में मुझे शक़ी (या'नी बद बख़्त), मह़रूम, धुत्कारा हुवा और रिज़्क़ में तंगी दिया हुवा लिख चुका हो तो ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! अपने फ़ज़्ल से मेरी बद बख़्ती, मह़रूमी, ज़िल्लत और रिज़्क़ की तंगी को मिटा दे और अपने पास उम्मुल किताब में मुझे ख़ुश बख़्त, (कुशादा) रिज़्क़ दिया हुवा और भलाइयों की तौफ़ीक़ दिया हुवा सब्त (तह़रीर) फ़रमा दे, कि तू ने ही तेरी नाज़िल की हुई किताब में तेरे ही भेजे हुए नबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़बाने फ़ैज़ तरजुमान पर फ़रमाया और तेरा (येह)

[1] پ۱۳، الرعد ۳۹

फ़रमाना ह़क़ है : **''तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : अल्लाह** जो चाहे मिटाता है और साबित करता है और अस्ल लिखा हुवा उसी के पास है।[1]'' ख़ुदाया عَزَّوَجَلَّ ! तजल्लिये आ'ज़म के वसीले से जो निस्फ़े **शा'बानुल मुकर्रम** की रात (या'नी शबे बराअत) में है कि जिस में बांट दिया जाता है हर ह़िक्मत वाला काम और अटल कर दिया जाता है। (**या अल्लाह !**) आफ़तों को हम से दूर फ़रमा कि जिन्हें हम जानते और नहीं भी जानते जब कि तू उन्हें सब से ज़ियादा जानने वाला है। बेशक तू सब से बढ़ कर अ़ज़ीज़ और इ़ज़्ज़त वाला है। **अल्लाह तआ़ला** हमारे सरदार **मुह़म्मद** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर और आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के आल व अस्ह़ाब رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُم पर दुरूदो सलाम भेजे। सब ख़ूबियां सब जहानों के पालने वाले **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं।

सगे मदीना عُفِیَ عَنْهُ की म-दनी इल्तिजाएं

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ ! सगे मदीना عُفِیَ عَنْهُ का सालहा साल से **शबे बराअत** में बयान कर्दा त़रीक़े के मुत़ाबिक़ छ[6] नवाफ़िल व तिलावत वग़ैरा का मा'मूल है। मग़रिब के बा'द की जाने वाली येह इ़बादत **नफ़्ल** है, फ़र्ज़ व वाजिब नहीं और नमाज़े मग़रिब के बा'द नवाफ़िल व तिलावत की शरीअ़त में कहीं मुमा-न-अ़त भी नहीं। **ह़ज़रते** अ़ल्लामा इब्ने रजब ह़म्बली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی लिखते हैं : अहले शाम में से जलीलुल क़द्र ताबिई़न म-सलन **ह़ज़रते** सय्यिदुना ख़ालिद बिन मा'दान, **ह़ज़रते** सय्यिदुना मक्ह़ूल, **ह़ज़रते** सय्यिदुना लुक़्मान बिन आ़मिर رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰى वग़ैरा शबे बराअत की बहुत ता'ज़ीम करते थे और इस में ख़ूब इ़बादत बजा लाते, इन्ही से दीगर मुसल्मानों ने इस मुबारक रात की ता'ज़ीम सीखी। (لَطَائِفُ الْمَعَارِف ج١ ص١٤٥) फ़िक़्हे ह़-नफ़ी की मो'तबर किताब,

[1] پ١٣، الرعد ٣٩

"दुर्रे मुख़्तार" में है **:** शबे बराअत में शब बेदारी (कर के इ़बादत) करना मुस्तह़ब है, (पूरी रात जागना ही शब बेदारी नहीं) अक्सर ह़िस्से में जागना भी शब बेदारी है। (دُرِّمُختار ج٢ ص٥٦٨, बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 679) **म-दनी इल्तिजा :** मुम्किन हो तो तमाम इस्लामी भाई अपनी अपनी मसाजिद में बा'दे मग़रिब छ6 नवाफ़िल वग़ैरा का एहतिमाम फ़रमाएं और ढेरों सवाब कमाएं। इस्लामी बहनें अपने अपने घर में येह आ'माल बजा लाएं।

साल भर जादू से ह़िफ़ाज़त

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 166 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, **"इस्लामी ज़िन्दगी"** सफ़ह़ा 135 पर है **:** अगर इस रात (या'नी शबे बराअत) **सात पत्ते** बेरी (या'नी बेर के दरख़्त) के पानी में जोश दे कर (जब पानी नहाने के क़ाबिल हो जाए तो) ग़ुस्ल करे اِنْ شَآءَاللهُ الْعَزِيْز तमाम साल **जादू** के असर से मह़फ़ूज़ रहेगा।

शबे बराअत और क़ब्रों की ज़ियारत

उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا फ़रमाती हैं **:** मैं ने एक रात **सरवरे काएनात**, शाहे मौजूदात صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को न देखा तो बक़ीए़ पाक में मुझे मिल गए, आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुझ से फ़रमाया **:** क्या तुम्हें इस बात का डर था कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस का रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तुम्हारी ह़क़ त-लफ़ी करेंगे ? मैं ने अ़र्ज़ की **: या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मैं ने ख़याल किया था कि शायद आप अज़्वाजे मुत़ह्हरात में से किसी के पास तशरीफ़ ले गए होंगे। तो फ़रमाया **:** "बेशक **अल्लाह तआ़ला** शा'बान की पन्दरहवीं रात आस्माने दुन्या पर तजल्ली फ़रमाता है, पस क़बीलए बनी

कल्ब की बकरियों के बालों से भी ज़ियादा गुनहगारों को बख़्श देता है।''

(سُنَنِ ترمذی ج ۲ ص ۱۸۳ حدیث ۷۳۹)

आतश बाज़ी का मूजिद कौन ?

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ शबे बराअत जहन्नम की आग से ''बराअत'' या'नी **छुटकारा** पाने की रात है, मगर सद करोड़ अफ़्सोस ! मुसल्मानों की एक ता'दाद आग से छुटकारा ह़ासिल करने के बजाए ख़ुद पैसे ख़र्च कर के अपने लिये आग या'नी **आतश बाज़ी** का सामान ख़रीदती और ख़ूब पटाख़े वग़ैरा छोड़ कर इस मुक़द्दस रात का तक़द्दुस पामाल करती है। **मुफ़स्सिरे** शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان अपनी मुख़्तसर किताब ''इस्लामी ज़िन्दगी'' में फ़रमाते हैं : ''इस रात को गुनाह में गुज़ारना बड़ी मह़रूमी की बात है **आतश बाज़ी** के मु-तअ़ल्लिक़ मश्हूर येह है कि येह नमरूद बादशाह ने ईजाद की जब कि इस ने ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम **ख़लीलुल्लाह** عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को आग में डाला और आग गुलज़ार हो गई तो उस के आदमियों ने आग के अनार भर कर उन में आग लगा कर ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम **ख़लीलुल्लाह** عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की त़रफ़ फेंके।'' (इस्लामी ज़िन्दगी, स. 76)

शबे बराअत की मुरव्वजा आतश बाज़ी ह़राम है

अफ़्सोस ! शबे बराअत में ''आतश बाज़ी'' की नापाक रस्म अब मुसल्मानों के अन्दर ज़ोर पकड़ती जा रही है। ''इस्लामी ज़िन्दगी'' में है : मुसल्मानों का लाखों रुपिया सालाना इस रस्म में बरबाद हो जाता है और हर साल ख़बरें आती हैं कि फ़ुलां जगह से इतने घर आतश बाज़ी से जल गए और इतने आदमी जल कर मर गए। इस में जान का ख़त़रा,

माल की बरबादी और मकानों में आग लगने का अन्देशा है, (नीज़) अपने माल में अपने हाथ से आग लगाना और फिर ख़ुदा तआ़ला की ना फ़रमानी का वबाल सर पर डालना है, ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ के लिये इस बेहूदा और **ह़राम काम** से बचो, अपने बच्चों और क़राबत दारों को रोको, जहां आवारा बच्चे येह खेल खेल रहे हों वहां तमाशा देखने के लिये भी न जाओ। (ऐज़न) (शबे बराअत की मुरव्वजा) आतश बाज़ी का छोड़ना बिला शक इसराफ़ और फ़ुज़ूल ख़र्ची है लिहाज़ा इस का **ना जाइज़ व ह़राम** होना और इसी त़रह़ आतश बाज़ी का बनाना और बेचना ख़रीदना सब शरअ़न मम्नूअ़ हैं। (फ़तावा अज्मलिय्या, जि. 4, स. 52) मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : आतश बाज़ी जिस त़रह़ शादियों और **शबे बराअत** में राइज है बेशक **ह़राम** और पूरा जुर्म है कि इस में तज़्यीए़ माल (माल का ज़ाएअ़ करना) है। (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 23, स. 279)

आतश बाज़ी की जाइज़ सूरतें

शबे बराअत में जो आतश बाज़ी छोड़ी जाती है उस का मक़्सद खेलकूद और तफ़रीह़ होता है लिहाज़ा येह गुनाह व ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है। अलबत्ता इस की बा'ज़ जाइज़ सूरतें भी हैं जैसा कि बारगाहे आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه में **सुवाल** हुवा : क्या फ़रमाते हैं उ़-लमाए दीन इस मस्अले में कि आतश बाज़ी बनाना और छोड़ना **ह़राम** है या नहीं ? **अल जवाब :** मम्नूअ़ व **गुनाह** है मगर जो सूरते ख़ास्सा लह्वो लइ़ब व तब्ज़ीर व इसराफ़ से ख़ाली हो (या'नी उन मख़्सूस सूरतों में जाइज़ है जो खेलकूद और फ़ुज़ूल ख़र्ची से ख़ाली हो), जैसे ए'लाने हिलाल (या'नी चांद नज़र आने का ए'लान) या जंगल में या वक़्ते ह़ाजत

शह्र में भी दफ़्ए़ जानवराने मूज़ी (या'नी ईज़ा देने वाले जानवरों को भगाने के लिये) या खेत या मेवे के दरख़्तों से जानवरों (और परिन्दों) के भगाने उड़ाने को नाड़ियां, पटाख़े, तूमड़ियां छोड़ना।

(फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 23, स. 290)

तुझ को शा'बाने मुअ़ज़्ज़म का ख़ुदाया वासित़ा
बख़्श दे रब्बे मुह़म्मद तू मेरी हर इक ख़त़ा

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

शबे बराअत में इबादत का जज़्बा बढ़ाने, इस मुक़द्दस रात में ख़ुद को आतश बाज़ी और दीगर गुनाहों से बचाने नीज़ अपने आप को बा किरदार मुसल्मान बनाने के लिये तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माह़ोल से हर दम वाबस्ता रहिये, हर माह कम अज़ कम तीन दिन के लिये **आ़शिक़ाने रसूल** के हमराह "म-दनी क़ाफ़िले" में सुन्नतों भरा सफ़र इख़्तियार कीजिये और **म-दनी इन्आ़मात** के मुत़ाबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारने की कोशिश फ़रमाइये। आप की तरग़ीब व तह़रीस के लिये **दो म-दनी बहारें** पेश की जाती हैं :

﴾1﴿ शबे बराअत के इज्तिमाअ़ से मेरा दिल चोट खा गया

मर्कज़ुल औलिया (लाहोर) के एक इस्लामी भाई की तह़रीर का लुब्बे लुबाब है : तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** के "म-दनी माह़ोल" से वाबस्ता होने से पहले مَعَاذَ اللهِ عَزَّوَجَلَّ ज़ियादा तर बद मज़्हबों की सोह़बत में रहने के बहुत बड़े गुनाह के साथ साथ दीगर त़रह़ त़रह़ के गुनाहों की ख़ौफ़नाक दलदल

में भी फंसा हुवा था, सद करोड़ अफ़्सोस कि **शबो रोज़ फ़िल्में डिरामे देखना, फ़ह़्हाशी के अड्डों के फेरे लगाना मेरे नज़्दीक** مَعَاذَ اللهِ عَزَّوَجَلَّ **क़ाबिले फ़ख़्र काम था।** मेरी गुनाहों भरी ख़ज़ां रसीदा शाम के इख़्तिताम और नेकियों भरी सुब्हे बहारां के आग़ाज़ के अस्बाब यूं बने कि एक इस्लामी भाई की **इन्फ़िरादी कोशिश** की ब-र-कत से मुझे **''हिन्जर वाल''** में **शबे बराअत** के सिल्सिले में होने वाले सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में शिर्कत की सआ़दत नसीब हो गई। मुबल्लिग़े दा'वते इस्लामी का बयान इस क़दर पुरसोज़ और रिक़्क़त अंगेज़ था कि मैं अपने गुनाहों पर नदामत से पानी पानी हो गया, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की नाराज़ी का कुछ ऐसा ख़ौफ़ त़ारी हुवा कि मेरी आंखों से **आंसूओं के धारे** बह निकले। इज्तिमाअ़ के इख़्तिताम पर हमारे अ़लाक़े के ''म-दनी क़ाफ़िला ज़िम्मेदार'' इस्लामी भाई ने मुझ से मुलाक़ात फ़रमाई और मुझे **तीन दिन के म-दनी क़ाफ़िले** में सफ़र की तरग़ीब दी, चूंकि दिल चोट खा चुका था लिहाज़ा मैं उन की **इन्फ़िरादी कोशिश** के नतीजे में म-दनी क़ाफ़िले का मुसाफ़िर बन गया। म-दनी क़ाफ़िले के अन्दर **आ़शिक़ाने रसूल** की शफ़्क़तों भरी सोह़बत में रह कर बे शुमार सुन्नतें सीखने की सआ़दत ह़ासिल हुई। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मैं ने अपने साबिक़ा तमाम गुनाहों से **तौबा** कर ली। जब **र-मज़ानुल मुबारक** की तशरीफ़ आ-वरी हुई तो मैं ने आ़शिक़ाने रसूल के साथ आख़िरी अ़-शरे के **ए'तिकाफ़** की सआ़दत ह़ासिल की। उस **ए'तिकाफ़** में सत्ताईसवीं शब एक ख़ुश नसीब इस्लामी भाई को اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ सरकारे दो आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत नसीब हुई, इस बात ने मेरे दिल में **दा'वते इस्लामी** की मह़ब्बत

को मज़ीद 12 चांद लगा दिये और मैं मुकम्मल तौ़र पर दा'वते इस्लामी के **म-दनी माह़ोल** से वाबस्ता हो गया।

आओ करने लगोगे बहुत नेक काम, म-दनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
फ़ज़्ले रब से हो दीदारे सुल्त़ाने दीं, म-दनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
शादमानी से झूमेगा क़ल्बे ह़ज़ीं,
म-दनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 645)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾2﴿ फ़िल्मों का ख़्वार

बाबुल मदीना (कराची) के अ़लाक़े ''बड़ा बोर्ड'' के एक इस्लामी भाई के बयान का ख़ुलासा है कि पहले पहल मैं मुआ़-शरे का बिगड़ा हुवा नौ जवान था, रोज़ाना पाबन्दी के साथ ख़ूब फ़िल्में डिरामे देखने के सबब मह़ल्ले में ''**फ़िल्मों का ख़्वार**'' के नाम से मश्हूर हो गया था। मेरी तौबा का सबब येह बना कि एक इस्लामी भाई की ''इन्फ़िरादी कोशिश'' के नतीजे में ''खज्जी ग्राउन्ड'' (गुल बहार, बाबुल मदीना) में तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** की त़रफ़ से होने वाले शबे बराअत के सुन्नतों भरे इज्तिमाए़ पाक में शिर्कत की सआ़दत ह़ासिल हो गई, वहां पर मैं ने ''क़ब्र की पहली रात'' के मौज़ूअ़ पर रुला देने वाला बयान सुना, **ख़ौफ़े ख़ुदा** عَزَّوَجَلَّ से दिल बेचैन हो गया, मैं ने पिछले गुनाहों से तौबा की और **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माह़ोल से वाबस्ता हो गया। हमारा सारा घराना मॉडर्न था, اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मेरी **इन्फ़िरादी कोशिश** से मेरे पांच भाई भी

दा'वते इस्लामी वाले बन गए और सब ने सरों पर **इमामा शरीफ़** का ताज सजा लिया और घर के अन्दर **म-दनी माहोल** बन गया, ता दमे तहरीर हल्क़ा मुशा-वरत के ख़ादिम की हैसिय्यत से सुन्नतों की ख़िदमत कर रहा हूं। मुझे सुन्नतों की तरबियत के **म-दनी क़ाफ़िलों** में सफ़र का काफ़ी शौक़ है, اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ हर माह पाबन्दी से तीन दिन **आशिक़ाने रसूल** के साथ म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र करता हूं।

यक़ीनन मुक़द्दर का वोह है सिकन्दर जिसे ख़ैर से मिल गया म-दनी माहोल
यहां सुन्नतें सीखने को मिलेंगी दिलाएगा ख़ौफ़े ख़ुदा म-दनी माहोल
ऐ बीमारे इस्यां तू आ जा यहां पर
गुनाहों की देगा दवा म-दनी माहोल

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 647, 648)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बयान को इख़्तिताम की तरफ़ लाते हुए **सुन्नत** की फ़ज़ीलत और चन्द सुन्नतें और आदाब बयान करने की सआदत हासिल करता हूं। ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मुस्तफ़ा जाने रहमत, शम्ए बज़्मे हिदायत, नोशए बज़्मे जन्नत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : जिस ने मेरी **सुन्नत** से महब्बत की उस ने मुझ से महब्बत की और जिस ने मुझ से महब्बत की वोह **जन्नत** में मेरे साथ होगा। (اِبنِ عَساکِر ج۹ص۳۴۳)

सीना तेरी सुन्नत का मदीना बने आक़ा
जन्नत में पड़ोसी मुझे तुम अपना बनाना

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

''शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म'' के ग्यारह हुरूफ़ की निस्बत से क़ब्रिस्तान की ह़ाज़िरी के 11 म-दनी फूल

﴾1﴿ नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम عَلَيْهِ اَفْضَلُ الصَّلٰوةِ وَالتَّسْلِيْم का फ़रमाने अ़ज़ीम है : मैं ने तुम को ज़ियारते क़ुबूर से मन्अ़ किया था, अब तुम क़ब्रों की ज़ियारत करो कि वोह दुन्या में बे रग़बती का सबब है और आख़िरत की याद दिलाती है। **(سُنَنِ اِبن ماجه ج۲ص۲۰۲حدیث۱۵۷۱)**

﴾2﴿ (**वलिय्युल्लाह** के मज़ार शरीफ़ या) किसी भी मुसल्मान की क़ब्र की ज़ियारत को जाना चाहे तो मुस्तह़ब येह है कि पहले अपने मकान पर (ग़ैरे मक्रूह वक़्त में) दो रक्अ़त नफ़्ल पढ़े, हर रक्अ़त में **सू-रतुल फ़ातिह़ा** के बा'द एक बार **आ-यतुल कुर्सी** और तीन बार **सू-रतुल इख़्लास** पढ़े और उस नमाज़ का सवाब साह़िबे क़ब्र को पहुंचाए, **अल्लाह तआ़ला** उस फ़ौत शुदा बन्दे की क़ब में **नूर** पैदा करेगा और इस (सवाब पहुंचाने वाले) शख़्स को बहुत ज़ियादा सवाब अ़त़ा फ़रमाएगा।

(فتاوٰی عالمگیری ج۵ص۳۵۰)

﴾3﴿ मज़ार शरीफ़ या क़ब्र की ज़ियारत के लिये जाते हुए रास्ते में फ़ुज़ूल बातों में मश्ग़ूल न हो। **(اَیضاً)**

﴾4﴿ क़ब्रिस्तान में उस आ़म रास्ते से जाए, जहां माज़ी में कभी भी मुसल्मानों की क़ब्रें न थीं, जो रास्ता नया बना हुवा हो उस पर न चले। ''रद्दुल मुह़्तार'' में है : (क़ब्रिस्तान में क़ब्रें पाट कर) जो नया रास्ता निकाला गया हो उस पर चलना **ह़राम** है। **(رَدُّالْمُحتار ج۱ص۶۱۲)**

बल्कि नए रास्ते का सिर्फ़ गुमाने ग़ालिब हो तब भी उस पर चलना ना जाइज़ व गुनाह है। (دُرِّمُختار ج۳ص۱۸۳)

﴿5﴾ कई मज़ाराते औलिया पर ज़ाइरीन की सहूलत की ख़ातिर मुसल्मानों की क़ब्रें मिस्मार कर के (या'नी तोड़ फोड़ कर) फ़र्श बना दिया गया है, ऐसे फ़र्श पर लैटना, चलना, खड़ा होना, तिलावत और ज़िक्रो अज़्कार के लिये बैठना वग़ैरा **हराम** है, दूर ही से फ़ातिहा पढ़ लीजिये।

﴿6﴾ ज़ियारते क़ब्र मय्यित के मुवा-जहा में (या'नी चेहरे के सामने) खड़े हो कर हो और उस (या'नी क़ब्र वाले) की पाइंती (या'नी क़दमों) की त़रफ़ से जाए कि उस की निगाह के सामने हो, सिरहाने से न आए कि उसे सर उठा कर देखना पड़े।

(फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 9, स. 532)

﴿7﴾ क़ब्रिस्तान में इस त़रह़ खड़े हों कि क़िब्ले की त़रफ़ पीठ और क़ब्र वालों के चेहरों की त़रफ़ मुंह हो इस के बा'द कहिये : اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ يَا اَهْلَ الْقُبُوْرِ يَغْفِرُ اللّٰهُ لَنَا وَلَكُمْ اَنْتُمْ لَنَا سَلَفٌ وَّنَحْنُ بِالْاَثَرِ **तरजमा :** ऐ क़ब्र वालो! तुम पर सलाम हो, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमारी और तुम्हारी मग़्फ़िरत फ़रमाए, तुम हम से पहले आ गए और हम तुम्हारे बा'द आने वाले हैं। (فتاوٰی عالمگیری ج ۵ ص ۳۵۰)

﴿8﴾ जो क़ब्रिस्तान में दाख़िल हो कर येह कहे : اَللّٰهُمَّ رَبَّ الْاَجْسَادِ الْبَالِيَةِ وَالْعِظَامِ النَّخِرَةِ الَّتِيْ خَرَجَتْ مِنَ الدُّنْيَا وَهِيَ بِكَ مُؤْمِنَةٌ اُدْخِلْ عَلَيْهَا رَوْحًا مِّنْ عِنْدِكَ وَسَلَامًا مِّنِّيْ۔ **तरजमा :** ऐ

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! (ऐ) गल जाने वाले जिस्मों और बोसीदा हड्डियों के रब ! जो दुन्या से ईमान की ह़ालत में रुख़्सत हुए तू उन पर अपनी रह़मत और मेरा सलाम पहुंचा दे। तो **ह़ज़रते** सय्यिदुना आदम (عَلَيْهِ السَّلَام) से ले कर उस वक़्त तक जितने मोमिन फ़ौत हुए सब उस (या'नी दुआ पढ़ने वाले) के लिये दुआए मग़्फ़िरत करेंगे।

(مُصَنَّف ابن اَبی شَیْبہ ج ۱۰ ص ۱۵)

﴿9﴾ शफ़ीए मुजरिमान صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने शफ़ाअ़त निशान है : जो शख़्स क़ब्रिस्तान में दाख़िल हुवा फिर उस ने **सू-रतुल फ़ातिह़ा, सू-रतुल इख़्लास** और **सू-रतुत्तकासुर** पढ़ी फिर येह दुआ मांगी : **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मैं ने जो कुछ क़ुरआन पढ़ा उस का सवाब इस क़ब्रिस्तान के मोमिन मर्दों और मोमिन औ़रतों को पहुंचा। तो वोह तमाम मोमिन क़ियामत के रोज़ उस (या'नी ईसाले सवाब करने वाले) के सिफ़ारिशी होंगे। (شَرْحُ الصُّدُور ص ۳۱۱) ह़दीसे पाक में है : ''जो ग्यारह बार **सू-रतुल इख़्लास** पढ़ कर इस का सवाब मुर्दों को पहुंचाए, तो मुर्दों की गिनती के बराबर उसे (या'नी ईसाले सवाब करने वाले को) सवाब मिलेगा।'' **(دُرِّمُختار ج ۳ ص ۱۸۳)**

﴿10﴾ क़ब्र के ऊपर **अगरबत्ती** न जलाई जाए इस में सूए अदब (या'नी बे अ-दबी) और बदफ़ाली है हां अगर (ह़ाज़िरीन को) ख़ुश्बू (पहुंचाने) के लिये (लगाना चाहें तो) क़ब्र के पास ख़ाली जगह हो वहां लगाएं कि ख़ुश्बू पहुंचाना मह़बूब (या'नी पसन्दीदा) है। (मुलख़्ख़सन फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 9, स. 482, 525) आ'ला

हज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه एक और जगह फ़रमाते हैं : ''सहीह मुस्लिम शरीफ़'' में हज़रते अम्र बिन आ़स رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه से मरवी, उन्हों ने दमे मर्ग (या'नी ब वक़्ते वफ़ात) अपने फ़रज़न्द से फ़रमाया : ''जब मैं मर जाऊं तो मेरे साथ न कोई नौहा करने वाली जाए न **आग** जाए।'' (مُسلِم ص۷۵حدیث۱۹۲)

﴿11﴾ क़ब्र पर चराग़ या **मोमबत्ती** वग़ैरा न रखे हां रात में राह चलने वालों के लिये रोशनी मक़्सूद हो, तो क़ब्र के एक जानिब ख़ाली ज़मीन पर **मोमबत्ती** या चराग़ रख सकते हैं।

हज़ारों सुन्नतें सीखने के लिये **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ दो कुतुब (1) **312** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब **बहारे शरीअ़त** ह़िस्सा **16** और (2) **120** सफ़ह़ात की किताब ''**सुन्नतें और आदाब**'' हदिय्यतन ह़ासिल कीजिये और पढ़िये। सुन्नतों की तरबियत का एक बेहतरीन ज़रीआ़ **दा'वते इस्लामी** के **म-दनी क़ाफ़िलों** में आ़शिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र भी है।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

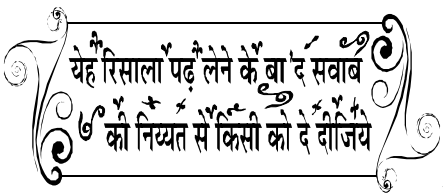

ग़मे मदीना, बक़ीअ़, मग़्फ़िरत और बे ह़िसाब जन्नतुल फ़िरदौस में आक़ा के पड़ोस का त़ालिब

यकुम र-जबुल मुरज्जब 1436 सि.हि.
21-04-2015 ई.

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **:** तुम जहां भी हो मुझ पर दुरूद पढ़ो कि तुम्हारा दुरूद मुझ तक पहुंचता है। (طبرانی)

مآخذ و مراجع

کتاب	مطبوعہ	کتاب	مطبوعہ
قرآن مجید		نزہۃ القاری	فرید بک اسٹال مرکز الاولیاء لاہور
تفسیر در منثور	دار الفکر بیروت	القول البدیع	مؤسسۃ الریان بیروت
تفسیر روح البیان	دار احیاء التراث العربی بیروت	غنیۃ الطالبین	دار الکتب العلمیۃ بیروت
صحیح بخاری	دار الکتب العلمیۃ بیروت	مکاشفۃ القلوب	دار الکتب العلمیۃ بیروت
مسلم	دار ابن حزم بیروت	شرح الصدور	مرکز اہلسنت برکات رضا الہند
سنن ابوداود	دار احیاء التراث العربی بیروت	لطائف المعارف	دار ابن حزم بیروت
سنن ترمذی	دار الفکر بیروت	فضائل الاوقات	مکتبۃ المنارۃ مکۃ المکرمۃ
سنن نسائی	دار الکتب العلمیۃ بیروت	در مختار	دار المعرفۃ بیروت
ابن ماجہ	دار المعرفۃ بیروت	رد المحتار	دار المعرفۃ بیروت
مسند امام احمد	دار الفکر بیروت	فتاوی عالمگیری	دار الفکر بیروت
مسند ابی یعلی	دار الکتب العلمیۃ بیروت	فتاوی رضویہ	رضا فاؤنڈیشن مرکز الاولیاء لاہور
شعب الایمان	دار الکتب العلمیۃ بیروت	فتاوی افریقہ	شبیر برادرز مرکز الاولیاء لاہور
مصنف ابن ابی شیبہ	دار الفکر بیروت	بہار شریعت	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی
جامع الصغیر	دار الکتب العلمیۃ بیروت	کلیات مکاتیب رضا	مکتبۃ العلوم گنج بخش روڈ مرکز الاولیاء لاہور
ابن عساکر	دار الفکر بیروت	اسلامی زندگی	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی
مرقاۃ	دار الفکر بیروت	وسائل بخشش (مرمم)	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی

येह रिसाला पढ़ कर दूसरे को दे दीजिये

शादी ग़मी की तक़रीबात, इज्तिमाआ़त, आ'रास और जुलूसे मीलाद वग़ैरा में **मक-त-बतुल मदीना** के शाएअ़ कर्दा रसाइल और म-दनी फूलों पर मुश्तमिल पेम्फ़लेट तक़्सीम कर के सवाब कमाइये, गाहकों को ब निय्यते सवाब तोह़फ़े में देने के लिये अपनी दुकानों पर भी रसाइल रखने का मा'मूल बनाइये, अख़्बार फ़रोशों या बच्चों के ज़रीए़ अपने मह़ल्ले के घरों में ह़स्बे तौफ़ीक़ रिसाले या म-दनी फूलों के पेम्फ़लेट हर माह पहुंचा कर नेकी की दा'वत की धूमें मचाइये और ख़ूब सवाब कमाइये।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जो लोग अपनी मजलिस से **अल्लाह** के ज़िक्र और नबी पर दुरूद शरीफ़ पढ़े बिग़ैर उठ गए तो वोह बदबूदार मुर्दार से उठे। (شعب الایمان)

फ़ेहरिस

उ़न्वान	सफ़ह़ा	उ़न्वान	सफ़ह़ा
आ़शिक़े दुरूदो सलाम का मक़ाम	1	इमामे अहले सुन्नत का पयाम तमाम मुसल्मानों के नाम	11
आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का महीना	2	पन्दरह शा'बान का रोज़ा	13
शा'बान के पांच हुरूफ़ की बहारें	2	फ़ाएदे की बात	14
सह़ाबए किराम का जज़्बा	3	सब्ज़ परचा	14
मौजूदा मुसल्मानों का जज़्बा	4	मग़रिब के बा'द छ[6] नवाफ़िल	15
नफ़्ल रोज़ों का पसन्दीदा महीना	4	दुआ़ए निस्फ़े शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म	16
लोग इस से ग़ाफ़िल हैं	5	मरने वालों की फ़ेहरिस बनाने का महीना	5
आक़ा शा'बान के अक्सर रोज़े रखते थे	6	सगे मदीना عُفِیَ عَنْهُ की म-दनी इल्तिजाएं	18
ह़दीसे पाक की शर्ह़	6	साल भर जादू से ह़िफ़ाज़त	19
दा'वते इस्लामी में रोज़ों की बहारें	6	शबे बराअत और क़ब्रों की ज़ियारत	19
शा'बान के अक्सर रोज़े रखना सुन्नत है	7	आतश बाज़ी का मूजिद कौन ?	20
भलाइयों वाली रातें	8	शबे बराअत की मुरव्वजा आतश बाज़ी ह़राम है	20
नाज़ुक फ़ैसले	8	आतश बाज़ी की जाइज़ सूरतें	21
ढेरों गुनाहगारों की मग़्फ़िरत होती है मगर...	9	शबे बराअत के इज्तिमाअ़ से मेरा दिल चोट खा गया	22
		फ़िल्मों का ख़्वार	24
ह़ज़रते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام की दुआ़	9	क़ब्रिस्तान की ह़ाज़िरी के 11 म-दनी फूल	26
मह़रूम लोग	10		